E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2023; 5(2): 177-180
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 13-09-2023
Accepted: 18-10-2023

भीष्म ठाकुर
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
भीष्म ठाकुर
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, भारत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गठन एवं संरचना :एक अध्ययन

भीष्म ठाकुर

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2023.v5.i2c.280

सारांश
1925 में गठित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक अनोखे संगठन के रूप अपने 100 वर्ष की सार्थक यात्रा तय करने ही वाला है |चंद लोगों से शुरुआत हुए इस संगठन की यात्रा आज इस मुकाम पर है कि भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक आयाम पर इसके प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं |आज संघ तमाम चुनोतियों के बावजूद एक वटवृक्ष के रूप में स्थित है | हिंदुत्व, हिन्दुराष्ट्र अथवा भारतीयता के प्रति अटल निष्ठा के अपने ध्येय को लिए हुए पुरे देश में ही नही अपितु विदेशों में भी अपने संगठन का विस्तार कर भारतीय जीवन पद्धति को विश्व में विस्तार के मार्ग पर चल पड़ा है |वसुधेव कुटुम्बक और सर्वे सन्तु निरामयाः ... जैसे उद्घोष के साथ विश्व में अपने प्रभाव को विस्तार देता नजर आता हैं |दुनिया में संगठन के अपने अनोखे मॉडल के साथ जिसके केंद्र में शाखा है, संघ की आज 50 हजार से अधिक शाखाएं हैं | संगठन की अपनी कार्यप्रणाली है, अपनी विशेष संरचना है |

कूटशब्द: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीयता, राष्ट्र, हिन्दुराष्ट्र, हिंदुत्व, हेडगेवार, प्रचारक, शाखा, प्रशिक्षण, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिन्दू, आदि

प्रस्तावना
विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का गठन 27 सितम्बर 1925 को महाराष्ट्र के नागपुर में हुआ था | विजयदशमी के शुभ मुहूर्त पर गठित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक सदस्यों में डॉ केशव बलिराम हेडगेवार, विश्वनाथ राव केलकर, बालाजी हुद्दार, भाऊजी कावरे, अन्ना सोहोनी तथा बाबुराव भेदी आदि प्रमुख थे |इसमें हेडगेवार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | हेडगेवार ने अत्यंत प्रभावी ढंग से स्पस्टीकरण किया कि संघ शुरू करने का अर्थ है कि हम सब शारीरिक, सैनिक तथा राजकीय तीनों प्रकार की शिक्षा लें तथा दूसरों को देना आरम्भ करें |

संघ की स्थापना कोई औपचारिक तरीके से प्रभावित नहीं था |अपितु गठन के दिवस पर संघ की दृष्टि से दो ही बातें बीजरूप से निश्चित थी \पहली हिन्दुराष्ट्र के पुनरुत्थान की डॉ हेडगेवारजी के मन की महत्वकांक्षा तथा दूसरी उसको साकार करने के लिए समर्पित किया हुआ हेडगेवार जी का चरित्रपूर्ण ध्येयनिष्ठ तथा सेवामय जीवन |

प्रारंभ में संघ के अज के सामान प्रतिदिन के कार्यक्रम नही थे |संघ के सदस्य से इतनी अपेक्षा की जाती थी कि वह किसी व्यायामशाला में जाकर पर्याप्त व्यायाम करें |

रविवार की सुबह 5 बजे सबको इतवार दरवाजा प्राथमिक विद्धयालय के मैदान में एकत्रित किय जाता था |कुछ दिनों बाद इस एकत्रीकरण के अवसर पर मार्तंड राव जोग की देख रेख में सैनिक प्रशिक्षण भी दिया जाने लगा, साथ ही राजकीय वर्ग जो 1927 ई.में बौद्धिक वर्ग के नाम से प्रचलित हुआ होता था| तत्कालीन संघ प्रमुख केशव बलिराम हेडगेवार ने संघ में आने वाले युवकों को स्वतंत्र रूप से शिक्षा देने का विचार शुरू किया |

इसके बाद महाराष्ट्र व्यायामशाला और प्रताप व्यायामशाला का स्वतंत्र रूप से प्रारंभ हुआ |

इससे पहले अन्ना खोत की व्यायामशाला में ये गतिविधियाँ होती थी| परन्तु दोनों ही व्यायामशालाओं की आपसी खींचतान एवं प्रतिद्वंदिता शुरू हो गया तब हेडगेवार जी ने संघ को अलग ले जाने का निश्चय किया और तदनुसार इतवार दरवाजा प्राथमिक स्कूल के मैदान में एना सोहोनी ने स्वतंत्र रूप से संघ के लाठी कार्यक्रम शुरू कर दिया |आरम्भ में व्यायामशाला तथा संघ के अलग अलग कार्यक्रम होतें थे तथा अंत में प्रार्थना के लिए सब इकट्ठा आ जाते थे |[1]

स्थापना के लगभग छः माह बाद ही इस संगठन का नामकरण "राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ " के रूप में किया जा सका |17 अप्रैल 1926 को डॉ हेडगेवार ने अपने घर पर एक बैठक बुलाई जिसमे 26 स्वयंसेवकओं ने भाग लिया था |उसमे इस नये संगठन के नामकरण के लिए काफी विचार विमर्श किया गया |इस बैठक में संगठन के लिए कई नाम सुझाएँ गये और प्रत्येक नाम पर बारीकी से विचार किया गया |अंतत तीन नाम सामने आये -1.राष्ट्रीय स्वयमसेवक संघ 2. जरीपटका मंडल 3. भार्तोध्दारक मंडल | इन नामों में राष्ट्रीय राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ को ही अंतिम रूप से चुना गया |[2]

नामकरण के बाद 9 मई 1926 को पहली बैठक हुई| इस बैठक में हर 15 दिन में मिलने, बैठक करने, शारीरिक, मजबूती के लिए अखाड़े शुरू करने और स्वयंसेवकों के पोशाक को लेकर विस्तार से चर्चा हुई| इसके बाद 12 दिसम्बर 1926 के बैठक में स्वयंसेवकों को सैनिक शिक्षा का प्रशिक्षण देने का फैसला किया गया |इसके लिए हर रविवार सुबह 6 बजे का समय तय किया गया |

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पहला आंतरिक सचिव रघुनाथ राव को बनाया गया साथ ही दो संयुक्त सचिव बनाने की बात हुई ताकि संतान को दिशा दी जा सके| 10 नवम्बर 1929 ई को सभी सदस्यों के आग्रह पर डॉ हेडगेवार औपचारिक तौर पर सरसंघचालक बन गये |

संघ की परिपाटी में भगवा ध्वज को गुरु का दर्जा प्राप्त है यह परम्परा 1927 से चली आ रही है |जब हेडगेवार संघ की अर्थ की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए तथा संगठन को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 1927 के गुरु पूर्णिमा के मौके पर भगवा ध्वज के समक्ष गुरुदाक्षिना का कार्यक्रम हुआ उस दिन 84 रूपये दक्षिणा के तौर पर इकट्ठा हुए थे| यह दक्षिणा गोपनीय होती है और इससे संगठन में आपकी हैसियत पर कोई असर नही पड़ता है |

28 मई 1926 के बाद शाखा के कार्यक्रम व्यवस्थित हो गये |नागपुर से बाहर पहली शाखा बर्धा में लगी |शाखा प्रणाली का प्रारम्भिक रूप स्वाध्यय मंडल थे |आगे चलकर शारीरिक प्रशिक्षण के कार्यक्रम तथा प्रशिक्षण शिविरों के आयाम जुड़ते चले गये |जैसे जैसे यह सब जुड़ता चला गया, दैनिक शाखा का स्वरुप भी आकार लेता चला गया| शाखा का समय एक घंटे का रहता है| इसके मुख्य घटकों का मानक रूप निर्धारित किया गया है तथा इसके प्रारंभ से ही अपरिवर्तनीय रहे है| इनमे शारीरिक कार्यक्रम, बौद्धिक कार्यक्रम व् चर्चाएं, खेल तथा व्यवस्थित रूप से संचलन के लिए समता का अभ्यास सम्मिलित है| शाखा में प्रारम्भ में भगवा ध्वज लगाने की एक निश्चित विधि है| सभी उपस्थित स्वयंसेवक इस समय स्व्धन की मुद्रा में खड़े होते है| शाखा का समापन प्रार्थना के साथ होता है| यह शाखा राष्ट्रीय स्वयंसेवक की मूलभूत इकाई है और प्रत्येक स्वयंसेवक किसी एक शाखा का सदस्य होता है|

संघ में पूर्णकालिक कार्यकर्ता यानि प्रचारक की व्यवस्था 1942 ई.से शुरू हुई | 1950 में संघ ने अपने काम के बंटवारे के हिसाब से संगठन के लिए प्रान्त और क्षेत्र बनाये | संघ के सबसे प्रमुख निर्णायक मंडल यानि अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का गठन भी इसी दौरान हुआ| इस प्रतिनिधि सभा में सभी स्टार के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया| प्रतिनिधि सभा से पहले सभी क्षेत्रों के वरिष्ठ सदस्यों की कोर कमेटी बनाई गई थी जो महत्वपूर्ण फैसले लेने का अधिकार रखती थी| 1939 में नागपुर के पास सिंदी में हुई सबसे महत्वपूर्ण चिंतन बैठक में संघ के स्वरूप, विभागों, पदाधिकारियो, पदनाम, प्रार्थना और एकात्मता स्त्रोत के बारे में निर्णय किये गये |[3]

संघ कि प्रार्थना की रचना और प्रारूप सबसे पहले फरवरी 1939 में सिंदी में हुई बैठक में तैयार की गई| तब प्रार्थना भारत माता की जय से शुरू होकर राष्ट्र गुरु स्वामी रामदास महाराज की जय पर खत्म होती थी |इसमें हिंददी और मराठी दोनों भाषाएँ शामिल थी तथा महाराष्ट्र में गठित होने के कारण मराठी प्रभाव स्पष्ट था किन्तु 1940 ई.में प्रार्थना संस्कृत में हो गई, तब वह भारत माता की जय के साथ खत्म होती थी | 23 अप्रैल 1940 को पुणे के संघ शिक्षा वर्ग में प्रार्थना को यादव

राव जोशी ने वर्तमान में बोली जाने वाली लय में गाया |संघ की प्राथना में 3 श्लोक व् 1 उद्घोष मिलाकर 13 पंक्तिया है|

संघ का उद्देश्य है -अपने इस भारत को दुनिया का एक सर्वश्रेष्ट देश बनाना |ज्ञान विज्ञानं के क्षेत्र में हमारा देश सर्वश्रेष्ठ हो |आर्थिक दृष्टि से वह स्वावलंबी और सम्पन्न हो| भारत ने कभी किसी पर आक्रमण नही किया है |लेकिन अगर भारत पर युद्ध थोपा जाये तो युद्ध में भारत हमेशा अजेय हो |इसके साथ-साथ भारत केवल एक देश नही है |भारत का जीवन का अक प्राचीन विचार है |एक चिंतन है|भारत की एक जीवन दृष्टि है |यह जीवन दृष्टि भारत के राष्ट्र जीवन के हर क्षेत्र में प्रकट हो |आध्यात्मिकता से पूर्ण एवं सर्वांगीण उन्नत समाज का निर्माण करना |[4]

संघ की धारणा है कि समाज में जाति, क्षेत्र अथवा आर्थिक स्तर के आधार पर पक्षपात एवं भेदभाव नही होना चाहिए |विविधता तो हिन्दू संस्कृति की विविध अभिव्यक्तियाँ है |संघ लौकिक व्यवहार में सहयोग, एक दुसरे के प्रति आदर तथा शांति ही संप्रेषित करना चाहता है |इसी आधारभूत बोध से ही हिन्दू राष्ट्र की संकल्पना निर्मित तथा सरल रूप में व्यायाख्यापित हुई है |

संघ भारत की सांस्कृतिक विरासत तथा प्राचीन ज्ञान परम्परा से प्रेरणा लेता है |यह आधुनिक है क्योंकि परिस्थितयों के अनुरूप यह अपने को अनुकूलित कर लेता है तथा समाज में होनेवाले परिवर्तनों को आत्मसात करने की क्षमता रखता है |

संघ के लिए हिंदुत्व तथा राष्ट्रवाद जो हिन्दुराष्ट्रवाद अथार्त सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है अविचलित पथ प्रदर्शक है |

हिंदुत्व की विशिष्टता को भारत के पूर्ण राष्ट्रपति स्वर्गीय सर्व्पल्ली राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक हिन्दू व्यू ऑफ़ लाइफ में व्यक्त किया है –"हिंदुत्व अथवा हिन्दुइज्म एक जीवन पद्धति है |यह चिंतन और विचार के मामले में सबको पूरी छुट देती है परतु आचरण के मामले में सबको उस आचार संहिता से बांधती है जिसे हिन्दू धर्म कहा जाता है |कोई आस्तिक हो या नास्तिक, कोई संदेहवादी हो या पलायनवादी यदि वे उस संस्कृति और जीवन पद्धति को अपनाते है तो वे सभी हिन्दू है| हिन्दुइज्म मजहवी एकात्मकता पर बल न देकर आध्यात्मिकता और नैतिक अथवा धार्मिक आचरण पर बल देता है |इसका आग्रह किसी विशेष पूजा पद्धति या मतवाद पर न होकर श्रेष्ठ व्यवहार और नैतिक मूल्यों पर है | सत्यंवद,धर्मचर का उपदेश इसी सत्य का धोतक है |वे सभी लोग जो उन नैतिक मूल्यों से (जो हिन्दू धर्म की विशेषताएं है) को अपनाने को तैयार हो, हिन्दुइज्म की इस परिधि में आ सकते है | हिन्दुइज्म कोई एक संप्रदाय या पंथ न होकर उन सब व्यक्तियों और पंथों का समाहार है जो ठीक मार्ग को अपनाते और सत्य को ग्रहण करने को उद्धत हो |"

हालाँकि संघ हिंदुत्व को हिन्दुइज्म के पर्यायवाची के रूप नही देखता है क्योंकि संघ राष्ट्र पर बल देता न कि राष्ट्रवाद पर |

शाखा संघ की प्राथमिक इकाई है |संघ की गतिविधियाँ में निष्ठापूर्वक भाग लेने वाला प्रत्येक सदस्य स्वयंसेवक कहलाता है |

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संगठन तंत्र त्रिवेणी में गुथा हुआ है |जिसमे एक धारा शाखा -कार्यवाह और मुख्य शिक्षक से प्रारंभ करके उतरोतर कार्यवाहो की है |दूसरी प्रचारकों की तथा तीसरी संघचालकों की है जो शीर्ष पर सभी का त्रिवेणी संगम हो जाता हैं |

शाखा स्तर पर अधिक से अधिक स्वयंसेवकों को नियमित रूप से शाखा में आने कि प्रेरणा देने के लिए गटनायक (टोलियों का नेता) होतें है | प्रोढ़, तरुणों, वालों और शिशुओं के गणों के पृथक -पृथक शिक्षण हेतु गण शिक्षक और शाखा कार्यक्रमों के सुचारू संचालन के एवं समग्र प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए कार्यवाह एवं शिक्षक |कुछ शाखाओं के समूह यानि मंडल की देखरेख का दायित्व मंडल -कार्यवाह का होता है |कार्यवाह का अर्थ सचिव या कार्यकारी अधिकारी |इस प्रकार मंडल से बड़ी इकाई के लिए ग्रामीण क्षेत्र में खंड -कार्यवाह और तहसील कार्यवाह है तथा नगर क्षेत्र में नगर कार्यवाह तत्पश्चात उतरोतर जिला, विभाग संभाग, प्रान्त और क्षेत्र के कार्यवाह अपनी अपनी भौगोलिक इकाई में दायित्व वहन करते है |यह एक धरा है |दूसरी धारा संगठनकर्ताओं की है जो खंड प्रचारक और तहसील प्रचारक या नगर प्रचारक से लेकर जिला, विभाग संभाग, प्रान्त और क्षेत्र प्रचारकों तक जाती है |प्रचारकों की भांति तीसरी धारा में तहसील या नगर से लेकर क्षेत्र तक के संघचालक आते है जो संघ की गतिविधियों की अध्यक्षता करने के लिए मनोनीत सम्मानित नागरिक होते है |इस सारी संरचना के प्रशासनिक शीर्ष पर सरकार्यवाह का पद है जिस पर आसीन होने वाले वस्तुतः वरिष्ठ प्रचारक ही होते है |सरकार्यवाह की नियुक्ति संगठनात्मक चुनाव द्वारा एक निश्चित अवधि 3 वर्ष के लिए होती है |संगठन के शीर्ष पर सर्वोच्च मार्गदर्शक के रूप में आसीन होते है जो अपने पूर्ववर्ती द्वारा संगठन के वरिष्ठजनों से परामर्श करके मनोनीत किये जाने के पश्चात् तब तक पद पर बने रहते है जब तक स्थान रिक्त होने का कारण न उपस्थित हो जाये |[6]

केन्द्रीय स्तर पर संगठन एवं प्रशासन की दृष्टि से दो

संश्थाएं है जिसमे एक अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा और दूसरी अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल कहलाती है | दोनों ही वर्ष में एक बार अधिवेशन करती है |
वर्तमान में संघ प्रचारकों की संख्या 6000 है |इन नियमित विस्तारकों और प्रचारकों के अतिरिक्त 2 वर्षों के लिए 1300 कार्यकर्ता शताब्दी विस्तारक के रूप में निकले है |संघ कार्य की दृष्टि से पुरे देश में 45 प्रान्त है, विभागों की संख्या 216 है, जिला की संख्या 911 है जिसमें 901 में संघकार्य चलता है | कुल 6663 खण्डों के 88% खण्डों पर संघ कार्यरत हैं| संघ में मंडलों की संख्या 26861 है| नित्य शाखा 56824 है| साप्ताहिक शाखा 26877 है | संघ मंडलियां 10412 है |
संघ कार्य का प्रमुख तरीका सेवा कार्य है जो मूलतः शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं स्वावलंबन के क्षेत्र में कार्य कर रहा है | आज संघ के 1.5 लाख से अधिक सेवा प्रकल्प चल रहा है |
एक गैर पंजीकृत सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन होने के बावजूद संघ की शक्ति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि मानव जीवन से जुड़े विभिन्न आयामों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का इतना प्रभाव है कि विभिन्न क्षेत्रों में संघ से संबद्ध 36 से अधिक संगठन आज देश में कार्य कर रहे है जिसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय मजदुर संघ दुनिया के बड़ों संगठनों में शुमार है |
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आनुषांगिक संगठनों में विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय सेवा भारती, भारतीय किसान संघ, संस्कृति भारती, राष्ट्र सेविका समिति, हिन्दू स्वयंसेवक संघ, स्वदेसी जागरण मंच, वनवासी कल्याण आश्रम, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच, लघु उद्योग भारती, आदि प्रमुख है| संघ दुनिया में अपना प्रभाव बना रहा है| राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नेटवर्क 39 देशों में फ़ैल चुका है| विदेशों में संघ की शाखाएं हिन्दू स्वयंसेवक संघ के नाम से लगती है| संघ का यह नेटवर्क अमेरिका और ब्रिटेन के अलावा पश्चिम एशियाई देशों में भी है | विदेशी में संघ की शाखाओं में ड्रेस कोड भी अलग होता है | जहाँ भारत में संघ के लोग खाकी निकर और सफेद शर्ट पहनते है वही विदेशों में काला पेंट और सफेद शर्ट पहनकर लोग शाखा में शामिल होते है| भारत में शाखाओं में भारत माता की जय का नारा लगाया जाता है,जबकि विदेशों में विश्व धर्म की जय का नारा लगाया जाता है| भारत के बाद शाखाओं की संख्या क्रमशः नेपाल और अमेरिका में है |[7]
संघ की गतिविधियों की शुरुआत विश्व में सबसे पहले केन्या में सन 1947 ई.में हुई फिर म्यांमार में 1950 और ब्रिटेन में 1966 में शुरुआत हुई | दक्षिण अफ्रीका के डरबन में सन 1995 में नेल्सन मंडेला ने विश्व हिन्दू सम्मलेन में हिस्सा लिया था |

निष्कर्ष: रूप से कहें तो संघ की तरह का कोई दूसरा मॉडल आज नही है जिससे संघ की तुलना की जा सके, ऐसी पूरी दुनिया में संगठनों का मॉडल नही है |

सन्दर्भ

1. नारायण हरि पालकर, 2020, डॉ हेडगेवार चरित, लोकहित प्रकाशन ,लखनऊ ,पृष्ठ संख्या-151.
2. अरुण आनंद, 2017, जानिए संघ को, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-20 .
3. विजय त्रिवेदी, 2020, संघम शरणम गच्छामि, वेस्टलैंड प्रकाशन, चेन्नई, पृष्ठ संख्या-49
4. नरेन्द्र ठाकुर, 2016, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण, विचार-विनिमय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-7
5. सिद्धार्थ शंकर गौतम, 2016 ,संघ राष्ट्र भावना का जागृत प्रहरी, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-69.
6. हरिश्चंद्र बर्थवाल, 2014, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ :एक परिचय, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 17-18 .
7. https://www.jansatta.com/national/rashtriya-swayamsevak-sangh-shakha-spreads-its-wings-to-39-countries/56166/,(20/9/2023 देखा गया).